UNIVERSITY OF CAMBRIDGE

ORIENTAL STUDIES TRIPOS Part II

South Asian Studies

Monday 8 June 2009 09.00 – 12.00

SA.18 HINDI TEXTS, 5

*Translate these **unseen** passages into **English**. Candidates should answer **all** questions.*
*All questions carry **equal** weight.*

*Write your number **not** your name on the cover sheet of **each** Answer Book.*

STATIONERY REQUIREMENTS
20 Page Answer Book x 1
Rough Work Pad

You may not start to read the questions printed on the subsequent pages of this question paper until instructed that you may do so by the Invigilator.

1. Translate into English:

साहित्य की मेरी पहचान

मेरा एक सिद्धांत है कि जहाँ तक हो सके, काम के साथी और शाम के साथी अलग हों। यह उसूल किताबों पर लागू नहीं होता। मैंने ज़िंदगी के पिछले चालीस साल भारतीय समाज और संस्कृति को समझने में बिताये हैं। प्रत्यक्ष अध्ययन का हिमायती होते हुए भी मैं साहित्य के माध्यम से भी भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तनों को समझने की कोशिश करता रहा हूँ। प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, भीष्म साहनी, राही मासूम रज़ा, कृष्णा सोबती आदि की कहानियाँ और उनके उपन्यास मेरे लिए साहित्यिक रचनाएँ भी हैं, समाज-वैज्ञानिक दस्तावेज़ भी। भारतीय ग्रामीण जीवन को उन्होंने रचनात्मक दृष्टि से और साहित्यकार की तीसरी आँख से देखा है, और उसके कुछ ऐसे पहलुओं के सूक्ष्म तत्वों की मार्मिक विवेचना की है जो हमारी शुष्क वैज्ञानिक दृष्टि और कष्टसाध्य सांख्यकीय विश्लेषण की पकड़ में नहीं आते। अमेरिका के कार्नेल विश्वविद्यालय में भारतीय परिवार पर एक कोर्स पढ़ाते समय मैंने कापी-राइट कानून का उल्लंघन करते हुए आधा दर्ज़न कहानियों के अनधिकृत अनुवाद कर उनका उपयोग किया था। राजेन्द्र यादव का सारा आकाश कई हफ्तों तक हमारी चर्चाओं का केंद्रबिंदु रहा। भारतीय स्त्री की समस्याओं को समझने में मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, दीप्ति खंडेलवाल, मालती जोशी आदि की रचनाएँ जिन पक्षों को उजागर करती हैं, उन्हें विश्लेषणात्मक ग्रंथ नहीं उजागर कर पाते।

Parampara itihas-bodh aur sanskriti, Shyamacharan Dubey, p.128-129.

2. Translate into English:

प्यारे हरिचंदजू

बालक धीरे-धीरे बढ़ने लगा। नामकरण हुआ हरिश्चंद्र। कहते हैं देवी-देवताओं का नाम इसलिए रखा जाता है कि संतान उनके समान हो। गोपालचंद्र ने क्या सोचकर नाम रखा था? क्या वे चाहते थे कि उसका पुत्र राजा हरिश्चंद्र की तरह सत्यवादी और उनके जैसा ही दानी हो? पता नहीं उनके मन में क्या था पर हुए हरिश्चंद्र वैसे ही। न दरवाजे आया कोई कभी खाली हाथ लौटा और न ही जो एक बार कह दिया या लिख दिया, उससे कभी मुकरे। इतना ही नहीं, राजा हरिश्चंद्र की तरह कवि हरिश्चंद्र ने दर-दर की ठोकरें भी खाईं।

हर बालक जैसे बचपन में होता है, हरिश्चंद्र भी वैसा ही था शायद थोड़ा अधिक सजग। माँ के अतिरिक्त दाई कालीकदमा उसकी देख-सम्हाल करतीं। और दो साल बड़ी बहन मुकुंदी तो उसका इतना ध्यान रखती कि लगता न जाने उससे कितनी बड़ी हो। दिन-भर गोदी में लिए रहना चाहती। दो साल बाद एक और भाई आया और उसके भी दो साल बाद एक और बहन। भाई आया तब तो हरिश्चंद्र दो वर्ष का था, भाई से स्वाभाविक ईर्ष्या हुई ही पर धीरे-धीरे उम्र के साथ समझदारी आती गई। छोटी बहन जब आई तब तक वह चार वर्ष का हो चुका था। बैठा बहन को देखा करता। माँ पास होतीं तो कभी माँ को, कभी बहन को देखता। माँ हँसकर पूछतीं – 'का देख रहे हो बच्चा, ऐसे एकटक'? बालक कहता – 'देख रहे हैं, तुम ज़्यादा सुंदर हो या बिटिया।' माँ हँसकर कहतीं – 'पगला कहीं का।' बालक सकुचाते हुए कहता – तुम तो सुंदर हो। और माँ की गोद में सिर छिपा लेता।

Pyare Harichandjoo, Pratibha Agarwal, p. 24-25

(TURN OVER

3. Translate into English:

स्त्री कितना डरायेगी?

अपने रोजमर्रा के जीवन में हम स्त्री की भूमिकाबद्ध उपस्थिति ही पाते हैं। स्वीकृत भूमिका से अलग किसी स्थिति में स्त्री का दिखना एक घटना मानी जाती है। इस बात की सच्चाई का एहसास प्रेमचंद की मनोवृत्ति शीर्षक कहानी आज तक करा रही है। इस कहानी के केन्द्र में एक युवती है जो पार्क की बेंच पर सारी रात सोती रहती है। सुबह के वक्त पार्क में स्वास्थ्य लाभ के लिए आनेवाले लोगों का ध्यान इस स्त्री की तरफ इस प्रकार जाता है जैसे बेंच पर लेटा पाया जाना कोई अपराध हो। इन लोगों में युवक, बूढे और महिलाएँ भी शामिल हैं। उनकी बातचीत बेंच पर पड़ी स्त्री को तरह-तरह के संदेहों के घेरे में लाकर लांछित करती है और वे ऐसी बातचीत एकदम सहज होकर करते हैं। कहानी पढ़कर हम पार्क और उसमें पड़ी बेंच की सार्वजनिक उपयोगिता की अपनी आम धारणा को खंडित पाते हैं। हम जान लेते हैं कि बेंच पुरुषों के लिए ही सार्वजनिक है। उस पर लेटकर जिस स्त्री ने सार्वजनिकता को चरितार्थ करने का दुस्साहस किया है, वह समाज की दृष्टि में भयानक रूप से हेय हो जाती है। पार्क की बेंच एक बेहद साधारण चीज़ न रहकर समाज में स्त्री की आजीवन क़ैद का खुलासा करनेवाला प्रतीक बन जाती है।

शायद ही कोई ऐसा पाठक इस लेख को पढ़ रहा हो जिसने कभी किसी पार्क की बेंच पर एक स्त्री को लेटे देखा हो। मैंने कभी नहीं देखा। बेंच पर लेटना तो शायद बहुत बड़ी बात है – तभी प्रेमचंद ने इस प्रसंग को चुनकर यह कहानी लिख डाली।

Vichar ka Dar, Krishna Kumar, p. 30

4. Translate into English:

थर्ड डिग्री

आप समझ सकते हैं कि कहानी के मूल पाठ के बाहर के एक पात्र सुरेश के साथ इस घटना का संबंध है। सुरेश ट्रक चलाता है। ट्रक की भाषा के साथ संबंधों की अभी तक कोई व्यवस्थित सैद्धांतिक पड़ताल नहीं की गई है, इसलिए इस समूची घटना के विवरण में भाषा के प्रयोग और उसके व्यवहार में उत्कृष्टता की ज़्यादा संभावना नहीं है।

फिर जैसा मैंने पहले कहा सुरेश के साथ चूँकि यह घटना कहानी के मूल पाठ के बाहर घटी है, और बिना कहानी की चिंता के घटी है, इसलिए इससे कहानी के मौजूदा ढाँचे और उसके स्वरूप के बदलने की भी कोई उम्मीद नजर नहीं आती।

वास्तविकता यह है कि किसी ट्रक चलानेवाले, सब्जी या अखबार बेचने वाले या खेती-किसानी करनेवाले – यानी असली दुनिया के किसी भी असली आदमी के साथ घटनेवाली घटनाएँ भाषा की परवाह किए बिना घटती हैं। ये घटनाएँ कहानी बनने की कोशिश किए बगैर घटती हैं। ऐसी इतनी सारी घटनाएँ चारों ओर हर रोज, हर पल लगातार घट रही हैं। आप सब उनके बारे में जानते हैं, भला उनसे समकालीन हिंदी कहानी के स्वरूप और संवेदना – या ढ़ाँचे और पाठ पर क्या असर पड़ता है? माता-पिता दोनों मर चुके थे। तेरह साल की उम्र में मैं अनाथ था। बड़े भाई ने घर और संपत्ति पर कब्जा जमा लिया था। पैसा न होने से दवा तो दूर, पाँच दिन से मैंने खाना भी नहीं खाया था, तब यही सुरेश अपने घर से दो रोटियाँ और आलू-गोभी की सब्जी चुराकर लाया था। मैं पाँच दिन की भूख और टायफायट के बीच रोटी और आलू-गोभी खा रहा था और रो रहा था। मुझे उस खाने का स्वाद आज भी याद है। मुझे अपना वह रोना भी याद है।

Aur Ant Mein Prarthana, Uday Prakash, pp. 68-69